संकलित परीक्षा – I (2014)

हिन्दी 'अ'

कक्षा – X

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 90**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न–पत्र के **चार खंड** हैं – **क, ख, ग** और **घ।**

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड–क
(अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

भाषा की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके बोलने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व विश्व के अनेक देशों में आजीविका की खोज में सुनहरे भविष्य का सपना लेकर गिरमिट–प्रथा के अंतर्गत मज़दूरों के रूप में हमारे ही पूर्वज गए थे। तब उन द्वीपों से बने आज के मुल्कों में जंगल, ऊबड़–खाबड़ भूमि तथा अनेक प्रकार की विषम स्थितियाँ थीं। वहाँ जाकर उन लोगों ने अपने परिश्रम, लगन, ईमानदारी तथा निष्ठा से उन द्वीपों को जहाँ अच्छे देश बनाया, वहीं आज उनकी संतानें सुशिक्षित, सुप्रतिष्ठित तथा सम्मानित नागरिक हैं। उनकी उन्नत सामाजिक स्थितियों के कारण ही उनकी भाषाएँ भी सम्मानित भाषाएँ हैं। इन देशों को जाने वाले भारतीय सामान्यत: बिहार तथा उत्तर प्रदेश के थे तथा भोजपुरी और अवधी बोलते थे। कुछ पंजाबी तथा केरल आदि प्रांतों के लोग भी गए थे जो अपनी–अपनी भाषाएँ बोलते थे। परंतु कालांतर में उनकी भाषाएँ मिली–जुली भाषाएँ हो गईं जिनमें भोजपुरी तथा अवधी भाषाओं का पुट ही अधिक है। इन भाषाओं के नए नामकरण हो गए। वे भारत में बोली जानेवाली हिंदी से बहुत भिन्न नहीं हैं और गर्वपूर्वक यह आभास कराती है कि दूरवर्ती देशों में भी हमारी भाषा–संस्कृति जीवित है।

(i) सुनहरे भविष्य की खोज में हमारे पूर्वज अनेक देशों में गए थे —

(क) विजेता के रूप में (ख) जमींदार के रूप में

(ग) मज़दूरों के रूप में (घ) उद्योगपति के रूप में

(ii) जिस प्रथा के अंतर्गत आजीविका के लिए लोग गए वह कहलाती थी —

(क) गिरगिट प्रथा (ख) ठेकेदारी प्रथा

(ग) गुरु–मीत प्रथा (घ) गिरमिट प्रथा

(iii) तब उन देशों की परिस्थितियाँ थीं, —

(क) संपन्नतापूर्ण (ख) विषम और प्रतिकूल

(ग) मैत्रीपूर्ण और अनुकूल (घ) अत्यंत अच्छी

(iv) उन द्वीपों में जाने वाले अधिकतर लोग निवासी थे, —

(क) पंजाब और आंध्र के (ख) बिहार और उत्तर प्रदेश के

(ग) पंजाब और हरियाणा के (घ) उड़ीसा और बंगाल के

(v) हमें गर्व होता है कि इन दूरवर्ती देशों में —

(क) हमारी भाषाई बोली जारी है। (ख) हमारी भाषा संस्कृति जीवित है।

(ग) हमें लोग जानते हैं। (घ) हमारे पूर्वज बसे थे।

JSUNIL TUTORIAL Chase Excellence

2 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

मेरे चारों ओर सभी दिशाओं में गंगा मैया अपने चमचमाते एवं लहराते जल की सर्द पोशाक धारण किये हुए चंचल गति से बह रही थी। उसकी लहरें कभी हिलोरें लेतीं तो कभी भँवरों में घूमती, मानो अपने ही मादक सौन्दर्य से अभिभूत हो अठखेलियाँ कर रही हों। कोई भी मानवीय कलाकार इस निर्बाध प्रदर्शन के एक क्षण को भी कैद नहीं कर सकता था। क्योंकि जैसे ही लहरों से कोई कलाकृति उभरती उसी क्षण वह लुप्त भी हो जाती। मैंने इससे एक शिक्षा ग्रहण की। इस संसार की सभी सुन्दर आकृतियाँ परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं। कुछ भी स्थिर नहीं है। हर क्षण के साथ हमारी वास्तविकता बदलती रहती है। जिस प्रकार गंगा माता प्रकृति के समान शाश्वत है, किन्तु उनका कोई भी रूप शाश्वत नहीं है, इसी प्रकार इस जगत् में हमें जो भी प्रिय है वह अनदेखे ही विलुप्त होता जाता है।

(i) गद्यांश में 'जल की सर्द पोशाक' से तात्पर्य है —

(क) सर्दी का मौसम (ख) सूती कपड़े

(ग) ठंडा पानी (घ) विशाल आकार

(ii) गंगा की लहरों की गतिशीलता से लेखक ने शिक्षा ग्रहण की है कि —

(क) संसार शाश्वत है।

(ख) सांसारिक कार्यकलाप स्वत: संचालित हैं।

(ग) संसार की सुंदर से सुंदर आकृति एक-सी नहीं रहती।

(घ) सृष्टि सुंदर है पर परिवर्तनशील है।

(iii) ''सौन्दर्य से अभिभूत अठखेलियाँ कर रही हों'' का भाव है —

(क) सुंदरता पर गर्व कर रही हों। (ख) सुंदरता पर मचल रही हों।

(ग) सुंदर होने की घोषणा कर रही हों। (घ) सुंदर होने से रूठी हों।

(iv) ''उसका कोई भी रूप शाश्वत नहीं है।'' वाक्य है —

(क) सरल (ख) मिश्र (ग) संयुक्त (घ) जटिल

(v) गद्यांश से शिक्षा मिलती है कि संसार में सब कुछ —

(क) सुंदर और स्थिर है। (ख) स्थिर है और अस्थिर भी है।

(ग) नाशवान और अप्रिय है। (घ) अस्थिर और नाशवान है।

3 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

है बौराया आम प्रफुल्लित गात-गात में

मतवाली पिक कूक रही छिप पात-पात में;

'ले चित्ताग्नि समक्ष खड़े मतवाले,

रे धिक् पलास के ठूँठ ! न अहं-संभाले।

नहीं गंध का नाम, चटकता क्यों कर ? -

आम्र सदृश क्या हो सकता तू यों कर ?

कह ! कैसे ? मैं आ तेरी डाल सजाऊँ ?

क्या निज को तव सदृश निर्गंध बनाऊँ ?

मैं काली हूँ तो क्या है ? हूँ गुणवाली।

मेरी मतवाली कूक, मात्र तव लाली।'

नव परिधानित रूप-राशि से मंडित।

मुस्कान सहित हैं निम्ब, जम्बु महिमंडित।।

पाकरि ने पाए वस्त्र न नूतन कम हैं।

महकते नीप तरु कहैं 'न कुछ कम हम हैं।'

(i) कोयल के मतवालेपन का कारण है,-

(क) पत्तों की हरियाली (ख) वसन्त का आगमन

(ग) आम का बौराना (घ) विभिन्नताओं का महकना

(ii) पलास का पेड़ प्रतीक है -

(क) मूर्ख व्यक्ति का (ख) नीच व्यक्ति का

(ग) गुणहीन घमंडी व्यक्ति का (घ) बलहीन व्यक्ति का

(iii) पलास का वृक्ष किस गुण के अभाव में आम के समान नहीं हो सकता -

(क) स्वाद (ख) गन्ध

(ग) माधुर्य (घ) हरीतिका

(iv) पलाश के प्रति कोयल के आकर्षण न होने का कारण है,–

(क) पलाश की गुणहीनता और गन्ध हीनता (ख) उसकी अभिमानिता

(ग) उसकी पत्रहीनता (घ) उसकी प्रदर्शन प्रियता

(v) ''मेरी मतवाली कूक मात्र तव लाली'' में अलंकार है –

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) श्लेष (घ) अनुप्रास

4 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

कोलाहल हो,

या सन्नाटा, कविता सदा सृजन करती है,

जब भी आँसू

हुआ पराजित, कविता सदा जंग लड़ती हैं।

जब भी कर्ता हुआ अकर्ता,

कविता ने जीना सिखलाया,

यात्रायें जब मौन हो गयीं

कविता ने चलना सिखलाया।

जब भी तम का

जुल्म चढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है,

जब गीतों की फसलें लुटतीं

शीलहरण होता कलियों का,

शब्दहीन अब हुई चेतना

JSUNIL TUTORIAL Chase Excellence

तब-तब चैन लुटा गलियों का

जब कुर्सी का

कंस गरजता, कविता स्वयं कृष्ण बनती है।

अपने भी हो गये पराये

यूं झूठे अनुबन्ध हो गये,

घर में ही वनवास हो रहा

यूं गूंगे सम्बन्ध हो गये

जब रिश्तों का

पतझर हँसता कविता मेघदूत रचती है,

कोलाहल हो

या सन्नाटा, कविता सदा सृजन करती है।

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

(i) कविता में प्रस्तुत नहीं किया गया है,-

(क) कविता का युद्ध करने का सामर्थ्य

(ख) अन्याय के समापन हेतु सूर्य जैसा प्रकाश

(ग) शृंगार का नग्न चित्र

(घ) सन्नाटे के मध्य भी सृजन शक्ति

(ii) ''जब भी आँसू हुआ पराजित'' का भाव है कि जब,-

(क) आँसू पोछने वाला कोई न हों

(ख) आँसू लगातार ढरकते ही रहें

(ग) दुखी की बात अनसुनी कर दी जाए

(घ) व्यक्ति का दुख बढ़ता चला जाए

(iii) घर में ही वनवास हो जाता है जब,-

(क) परिवार में झगड़ा हो

(ख) घर में एकता का अभाव हो

(ग) घर के सभी लोग रुठ कर चुप हो जाएँ में अपनापन समाप्त हो जाए

(घ) दूसरे लोगों जैसा व्यवहार करने लगते हैं

(iv) 'शीलहरण होता कलियों का' का आशय है जब,–

(क) स्त्रियों पर अन्याय हो

(ख) कुमारियों का चरित्र–हनन हो

(ग) नारियाँ अपमानित की जाएँ

(घ) महिलाओं को अधिकारों से वंचित किया जाए

(v) ''जब कुर्सी का कंस गरजता, कविता स्वयं कृष्ण बनती है '' में अलंकार है -

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) यमक

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

खण्ड–ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

5	**वाक्य भेद लिखिए** – (i) जगदीप सिंह अच्छे आदमी हैं इसलिए उनसे मिलना अच्छा लगता है। (ii) मुसीबतें झेलने से ही आदमी उन्नति करता है। (iii) जो किसी के काम नहीं आते उन्हें कोई नहीं पूछता	3
6	**निर्देशानुसार वाच्य–परिवर्तन कीजिए ।** (क) रतनसिंह ने जंगल में भ्रमण किया। (कर्मवाच्य में) (ख) आपके द्वारा सुंदर लेख लिखा गया। (कर्मवाच्य में)	4

(ग) नागेन्द्र से भलीभाँति तैरा गया। (कर्तृवाच्य में)

(घ) वे रो न सके। (भाववाच्य में)

7 **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए।** 4

(क) मैं गत वर्ष मुंबई गया था।

(ख) सतीश पिछले वर्ष मेरे साथ था।

(ग) मैं उसे देहरादून में मिला था।

(घ) ज्ञानसिंह मुझे कुछ पुस्तकें दे गया है।

8 निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 4

(क) 'शृंगार' तथा 'भयानक' रसों के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) निम्नांकित पद्यांशों में कौन-सा रस है? बताइए।

(i) गंदे कटे-पिटे हाथ, जख्म से फटे हुए हाथ।

खुशबू रचते हैं हाथ, खुशबू रचते हैं हाथ।।

(ii) यह घड़ा पाप का हमें फोड़ना होगा

अधिकारवाद का किला खड़ा छाती पर

करके प्रहार यह किला तोड़ना होगा।।

JSUNIL TUTORIAL Chase Excellence

खण्ड-ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2+2+1)** 5

''इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज़्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज़्यादा हकदार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है,

इसकी ख़बर रखने की लोगों को कहाँ फ़ुरसत ! किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है।

हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं; फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और, उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं।''

(क) बालगोबिन भगत के अनुसार कौन लोग अधिक निगरानी और मुहब्बत के हक़दार होते हैं ? उन्होंने ऐसा व्यवहार किसके साथ किया था ?

(ख) बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु के बाद उनके द्वारा किए गए क्रिया कलापों का वर्णन कीजिए। ऐसा किया जाना उनकी किस विचारधारा का प्रतीक है ?

(ग) बालगोबिन भगत की पुत्रवधू की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

10(i)	नेताजी की प्रतिमा की आँखों पर कैसा चश्मा लगा था? प्रतिमा वाले पत्थर का चश्मा न लगा होने के संभावित कारणों पर पठित पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए।	2
(ii)	गंगा-स्नान के लिए जाते हुए उनकी दिनचर्या क्या रहती थी तथा वे कितने दिनों में वापस घर लौटते थे? इससे उनकी किस विशेषता का परिचय मिलता है?	2
(iii)	फ़ादर कामिल बुल्के की साहित्य-साधना पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।	2
(iv)	नवाब साहब ने खीरों की फाँकों को किस दृष्टि से देखा और उनके स्वाद की अनुभूति में उनकी दशा कैसी हो गई? उसके बाद उन्होंने क्या किया?	2

JSUNIL TUTORIAL Chase Excellence

(v)	यह कैसे कहा जा सकता है कि बालगोबिन भगत की पतोहू एक आदर्श पतोहू थी? क्या आधुनिक समय में भी इस प्रकार का आदर्श प्रासंगिक माना जा सकता है?	2
11	**निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए — (2+2+1)** हरि हैं राजनीति पढ़ि आए। समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए। इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए। बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए। ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए। अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए। ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए। राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।। (क) कविता में कौन किससे अपनी बात कह रहा है ? कहने वाले की दृष्टि में आगे अर्थात् पूर्व (पहले के) समय के लोगों की क्या विशेषता थी ? (ख) ''इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। (ग) कविता में 'हरि' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और उन्होंने मधुकर के द्वारा क्या संदेश भेजा है ?	5
12(i)	गोपियों की दृष्टि में ऐसा कौन है जिसने प्रेम की नदी में पैर नहीं रखा है ? उनको वह कैसा व्यक्ति प्रतीत होता है ?	2
(ii)	''कवि निराला ने बादलों को बाल-कल्पना के-से पाले'' क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।	2
(iii)	''प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै'' पंक्ति में निहित भाव को अपने शब्दों में लिखिए।	2
(iv)	''अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में'' पंक्ति में कवि के जीवन के कैसे क्षणों तथा दिनों का आभास	2

JSUNIL TUTORIAL Chase Excellence

	मिलता है ? स्पष्ट कीजिए।	
(v)	'धूलि-धूसर गात' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बताइए कि कवि ने उसे क्या उपमा दी है ?	2
13	''माता का अँचल'' पाठ के आधार पर बताइए कि बाबूजी भोलानाथ को किस पात्र में क्या-क्या खिलाते थे? आधुनिक शहरी जीवन में खानपान में आए बदलाव की चर्चा कीजिए।	5
	खण्ड-घ **(लेखन)**	
	दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।	
14(i)	**राष्ट्रीय एकता की प्रतीक - हिंदी भाषा** • भूमिका • संपर्क भाषा के रूप में • राष्ट्रभाषा के रूप में • सदियों से हिंदी में विचारों का आदान-प्रदान • उपसंहार	10
	अथवा	
(ii)	**''साँच बराबर तप नहीं''** • भूमिका	10

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

	• सूक्ति का आशय • सत्य की महिमा • सत्य के प्रकार एवं स्वरूप • उपसंहार	
	अथवा	
(iii)	**भारतीय किसान** • भूमिका • किसान का जीवन–अभावपूर्ण • गरीबी और संघर्ष • उपाय • उपसंहार	10
15	विद्यालय परिसर में आपकी कीमती घड़ी कहीं गिर गई, उसे ढूँढ़ने में आपके सहपाठी अमित ने बडी मदद की, उसे मदद देने के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हुए पत्र लिखें।	5
16	**निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और लगभग एक तिहाई शब्दों में उसका सार लिखिए।** अगर हम 'पंचतंत्र' के लेखनकाल को देखें, जो हटेल के अनुसार लगभग दो सौ ई.पू. की रचना है, तो वह कालखंड भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से दर्ज है। उस समय भारत में समुद्रगुप्त का राज्य था। बौद्ध धर्म उससे तीन शताब्दियों पहले ही स्थापित हो चुका था और हीनयान–महायान से गुजरता हुआ वह अपनी दार्शनिक विचारधारा को परिपक्व करने में लगा था। उससे करीब दो शताब्दी पहले ही नागार्जुन शून्यवाद के माध्यम से बौद्ध दर्शन को तार्किक ऊँचाई प्रदान कर चुके थे। बौद्धों, जैनियों, वैदिक धर्मावलंबियों तथा शैवों में परस्पर तर्क–वितर्क होते रहते थे। एक प्रकार से वह महान बौद्धिक उपलब्धियों तथा राजनीतिक स्थिरता का समय था, जहाँ एक ओर चरक जैसे प्रखर आयुर्वेदाचार्य तथा वराहमिहिर जैसे समर्थ खगोलविज्ञानी थे, वहीं दूसरी ओर कवि भास 'मुद्राराक्षस' जैसी अमर कृति की रचना कर रहे थे। वैदिक साहित्य की परंपरा में भी कई महत्त्वपूर्ण उपनिषद् उस काल तक लिखे जा चुके थे।	5

JSUNIL TUTORIAL Class Excellence

MARKING SCHEME
SUMMATIVE ASSESSMENT – I (2014-15)
HINDI – A Class – X

General Instructions:

1. The Marking Scheme provides general guidelines to reduce subjectivity and maintain uniformity. The answers given in the marking scheme are the best suggested answers.

2. Marking be done as per the instructions provided in the marking scheme. (It should not be done according to one's own interpretation or any other consideration).

3. Alternative methods be accepted. Proportional marks be awarded.

4. If a question is attempted twice and the candidate has not crossed any answer, only first attempt be evaluated and 'EXTRA' be written with the second attempt.

5. In case where no answers are given or answers are found wrong in this Marking Scheme, correct answers may be found and used for valuation purpose.

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

खण्ड-क

(अपठित बोध)

1		5
2		5
3		5
4		5

खण्ड-ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

5		3
6		4
7	(क) मैं – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'मिला था' क्रिया का कर्ता। (ख) पिछले – विशेषण (वर्ष विशेष्य) पुल्लिंग, एकवचन (ग) देहरादून – संज्ञा व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरणकारक, मिला था क्रिया से संबद्ध। (घ) पुस्तकें – व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्मकारक 'दे गया' क्रिया का कर्म	4

8	(क) प्रेम (रति प्रेम); भय (डर) (ख) (i) करुण रस (ii) वीर रस	4
	खण्ड-ग **(पाठ्य-पुस्तक)**	
9	(क) सुस्त, बोदे तथा विकलांग सदृश या मंदबुद्धि लोग। वे अपने पुत्र की बोदी हालत तथा सुस्त होने से उसकी पूरी देखभाल रखते थे। (ख) आँगन में पुत्र के शव को लिटाना, सफ़ेद कपड़ा ओढ़ाना, उसके ऊपर फूल बिखरा देना, तुलसी दल भी, सिरहाने एक चिराग जला देना। सामने ज़मीन पर आसन जमाकर गीत गाते चले जाना। उनकी यह दार्शनिकता कि आत्मा परमात्मा से मिलने जा पहुँची, अत: भजन गाते रहना उचित। (ग) सुभग, सशील, अच्छी प्रबंधकारिणी, दुनियादारी के मामलों में प्रवीण तथा आज्ञाकारिणी।	5
	निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-	
10(i)	नगरपालिका को देश के मूर्तिकारों की जानकारी न होना, अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान बजट का अभाव, शासनावधि की समाप्ति स्थानीय स्कूल मास्टर मोतीलाल (मान लें) को ही काम सोंपा जाना जिसमें महीने भर में मूर्ति बनाने का विश्वास दिलाया होगा। शीघ्रता में उसी पत्थर का चश्मा न बन पाया होगा।	2
(ii)	घर से भोजन करने जाते, घर ही आकर करते। रास्ते में खँजड़ी बजाते गाते। प्यास लगती पानी पी लेते। कहते साधु को क्या संबल से काम? गृहस्थ को भिक्षा माँगना वर्जित। चार-पाँच दिन लगते। उनकी सिद्धांत प्रियता की जानकारी मिलती है।	2

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

(iii)	मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक ''ब्लू बर्ड'' का रूपांतर ''नील पंछी'' नाम से किया सेंट जेवियर्स कालेज रांची में प्राध्यापक एवं अध्यक्ष रहकर अनेक छात्रों का मार्गदर्शन किया। ''रामकथा – उत्पत्ति और विकास'' पर अनोखा शोध ग्रंथ लिखा; अंग्रेजी हिंदी तथा ''हिंदी अंग्रेजी कोश'' तैयार किया, बाइबिल का अनुवाद भी किया। सतत लेखन में सक्रिय रहे।	2
(iv)	सतृष्ण आँखों से, स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गई। मुँह में आया पानी का घूट गले से उतार लिया फाँक बाहर फेंक दी।	2
(v)	बहू अत्यंत कार्यकुशल दक्ष तथा सुंदर सुशील। आज के गृहस्थों में इस–प्रकार की गृहिणी वरदान स्वरूप, किन्तु इस प्रकार की गृहिणी आज कल दुर्लभ है।	2
11	(क) गोपियाँ उद्धव से; पहले के लोग भले थे जो दूसरों के हित के लिए कष्ट सहते थे। (ख) गोपियों का कथन है कि कृष्ण पहले ही बहुत सयाने थे पर अब तो उनकी गुरु कुब्जा से उन्होंने ग्रंथ (सीख) पढ़ लिए हैं, कुब्जा की सीख पा ली है। (ग) 'हरि' श्रीकृष्ण के लिए; योग का संदेश कि 'प्रेम' का दर्शन छोड़ो, योग द्वारा ब्रह्म को पहचानो।	5
12(i)	उद्धव, वह अनुराग का मार्ग भी नहीं जानता। वह तो मात्र चिकना घड़ा है जिस पर बूँद नहीं ठहरती।	2

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

	(ii)	बादलों का यकायक अज्ञात दिशा से आकर फैल या छा जाना, बाल-कल्पना के क्रिया कलापों के अनुरूप लगता है।	2
	(iii)	गुलाब का फूल चटक लाल, कवि उसके प्रातः खिलने को ही वसंत रूपी बालक को जगाने की क्रिया रूप में चित्रित करते हैं।	2
	(iv)	उषा प्रातः अथवा दैनिक जीवन का प्रतीक, पंक्ति का आशय अच्छे दिन थे, सुखमय वातावरण था जो बदल गया।	2
	(v)	धूल से युक्त (सना हुआ) शरीर, बच्चे का धूल भरा शरीर जिसने तालाब के स्थान में कवि की झोंपड़ी में ही खिले कमल का सादृश प्रदान किया है।	2
	13	बाबू जी फूल के कटोरे में 'गोरस भात' तो माँ दही-भात थाली में सानकर खिलातीं। हर कौर को पक्षियों के अलग-अलग नामों से खिलाती जाती। (बदलाव की चर्चा छात्र स्वयं)	5
		खण्ड-घ	
		(लेखन)	

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence

	दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।			
14(i)	**प्रस्तावना – उपसंहार** **विषयवस्तु – प्रस्तुति** **भाषा**	– – –	**2** **6** **2**	10
	अथवा			
(ii)	**प्रस्तावना – उपसंहार** **विषयवस्तु – प्रस्तुति** **भाषा**	– – –	**2** **6** **2**	10
	अथवा			
(iii)	**प्रस्तावना – उपसंहार** **विषयवस्तु – प्रस्तुति** **भाषा**	– – –	**2** **6** **2**	10
15	प्रारंभ और अंत की औपचारिकताएँ विषय – वस्तु भाषा	1½ 2½ 1		5
16	**विषयवस्तु-समावेशी-संक्षिप्तीकरण** **एक तिहाई आकार परक लेखन**	– –	**3 अंक** **1 अंक**	5

JSUNIL TUTORIAL
Chase Excellence